SCA
Shakti's Classes for Ayurveda
Chiseling the Brilliants

SINCE 2011 IN VARANASI

SHAKTI'S CLASSES for AYURVEDA

A Complete Centre for MD/MS(AIAPGET.), MO (UPSC & PSC), Other Ayurvedic Entrance Examination and Foundation Courses for Proff. I, II & III

Dravyagun

By
Dr. Shakti Raj Rai
9452376134

द्रव्यगुण का सिद्धांत

Dr. Shakti Raj Rai

द्रव्यगुण की परिभाषा

द्रव्याणां गुण कर्माणि प्रयोग विविधास्तथा। सर्वशो यत्र वण्यन्ते शास्त्रम् द्रव्यगुण हि तत्।। प्रियव्रत शर्मा

द्रव्यगुण के अंग - 6 प्रियव्रत शर्मा

नामरुप ज्ञान	प्रयोग ज्ञान	गुण ज्ञान
योग ज्ञान	कर्म ज्ञान	कल्प ज्ञान

द्रव्यगुण के पदार्थ - 7 द्रव्य गुण कर्म रस वीर्य विपाक प्रभाव

द्रव्य की पञ्चावस्था - शाङ्र्धर

द्रव्य का सेवन करने पर उसमें अनुभव-क्रम से रस, गुण, वीर्य, विपाक व शक्ति (प्रभाव) ये पाँच अवस्थाएँ कही गयी है।

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।
संवेदनक्रमादेताः पञ्चावस्था प्रकीर्तिताः।। शाङ्र्धर

द्रव्य

परिभाषा

जिसमें कर्म व गुण आश्रित हो तथा जो कर्म व गुण का समवायी कारण है, द्रव्य कहलाता है।

- यत्राश्रिता कर्म गुणाः कारणं समवायि यत् तद् द्रव्यम्। च.सू. 1
- क्रियागुणवत् समवायि कारणं द्रव्यम्। सु.सू. 4.
- द्रव्याश्रयं लक्षणं पञ्चानाम्। रस वैशेषिक (नागार्जुन)
  (जो रस, गुण, विपाक, वीर्य तथा कर्म इन पाँचों का आश्रयभूत हो।)
- गुणकर्मवत् समवायि कारणं द्रव्यं। प्रियव्रत शर्मा
- रसादीनां पदार्थनां यदाश्रयभूतं तद् द्रव्यम्। भाव मिश्र
- सर्वद्रव्यं पाञ्चभौतिकमस्मिन्नर्थे। च.सू. 26

Shakti's Classes for Ayurveda

द्रव्यों के प्रकार

1. कार्य कारण भेद से

कारण द्रव्य सृष्टि के मौलिक तत्व जिनसे सभी द्रव्य उत्पन्न होते है कारण द्रव्य कहलाता है।

कारण द्रव्य की संख्या - 9 (पञ्चमहाभूत, आत्मा, मन, दिशा व काल)

कार्य द्रव्य - कारण द्रव्य से उत्पन्न वाले सृष्टि के सभी द्रव्य कार्य द्रव्य कहलाते है। ये अपरिसंखेय होते है।

2. चेतना भेद से

चेतन द्रव्य	इन्द्रियों से युक्त
अचेतन द्रव्य	इन्द्रियों से रहित

चेतन द्रव्य पुनः दो प्रकार के होते है -

1. अन्तश्चेतन - औद्भिद 2. बहिश्चेतन - जांगम

3. योनि भेद से – 3 जांगम, औद्भिद व भौम

4. प्रयोग भेद से – 2 आहार व औषधि

आहार व औषधि में अंतर चक्रपाणि ने बताया।

आहार	रस प्रधान,
औषधि	वीर्य प्रधान

आहार की सामान्य मात्रा - 4 पल

5. कर्म (प्रभाव) भेद से – 3 शमन, कोपन व स्वस्थहित

शमनं कोपनं स्वस्थहितं द्रव्यमिति त्रिधा। अ.हृ. 1

किञ्चिद्दोषप्रशमनं किचिद्धातु प्रदूषणम्। स्वस्थवृत्तौ मतं किञ्चित त्रिविधं द्रव्यमुच्यते।। च.सू. 1

6. महाभूतों के उत्कर्ष के आधार पर - 5

पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य व आकाशीय

7. रसभेद के आधार पर - 6

मधुर स्कन्ध, अम्ल स्कन्ध, लवण स्कन्ध, कटु स्कन्ध, तिक्त स्कन्ध व कषाय स्कन्ध

8. विपाक भेद के आधार पर - 3

मधुर विपाक, अम्ल विपाक व कटु विपाक

9. वीर्य भेद के आधार पर - 2

शीत वीर्य, उष्ण वीर्य

Shaktis Classes for Ayurveda

10. आहार वर्ग की संख्या

चरक - 12 वर्ग

सुश्रुत - अन्न वर्ग - 13, द्रव वर्ग - 10, (लवण, दधि व क्षार वर्ग)

अष्टांग संग्रह - अन्न वर्ग - 6, (पद्मकादि वत्सकादि वर्ग) द्रव वर्ग - 6

अष्टांग हृदय - अन्न वर्ग - 7 (औषधि वर्ग) द्रव वर्ग - 5 (मूत्र वर्ग नहीं)

द्रव्यों का कार्य प्रणाली

चरकानुसार	सुश्रुतानुसार
यत कुर्वन्ति तत् कर्म	यदा कुर्वन्ति स कालः
येन कुर्वन्ति तद् वीर्यं	यत्कुर्वन्ति तदधिकरणं
यत्र कुर्वन्ति तद् अधिकरणम्	यथा कुर्वन्ति स उपाय
यदा कुर्वन्ति स काल	यन्निष्पादयन्ति तत् फलम्
यथा कुर्वन्ति स उपाय	
यत् साधयन्ति तत् फलम्	

गुणा य युक्ता द्रव्येषु शरीरेष्वपि ते तया।

स्थानवृद्धिक्षयास्तस्माद् देहिनां द्रव्य हेतुका।। सु.सू. 41

प्राणियों के शरीर में दोष धातु और मलों की स्थिति, वृद्धि तथा क्षय सेवित द्रव्यों के कारण ही होता है।

पाको नास्ति बिना वीर्य्याद्वीर्यं नास्ति बिना रसात्।

रसो नास्ति बिना द्रव्याद् द्रव्यं श्रेष्ठतमं स्मृतम्।। सु.सू. 41

वीर्य के बिना पाक नहीं, रस के बिना वीर्य नहीं एवं आधार भूत द्रव्य के बिना रस की उत्पत्ति नहीं होती इसलिए द्रव्य को ही अधिक श्रेष्ठ या प्रधान समझना चाहिए।

Shakti's Classes Veda

गुण प्रकरण

निरुक्ति

'गुण आमंत्रणे' धातु से 'गुण' शब्द निष्पन्न होता है।

'गुण्यते ***आमंत्र्यते*** लोक अनेन इति गुणः' अर्थात जिसके कारण लोग द्रव्य की तरफ आकृष्ट होते है उसे गुण कहते हैं।

परिभाषा

जो समवाय सम्बन्ध से द्रव्य में आश्रित हो, कर्म रहित हो, गुणरहित हो तथा कार्य के प्रति असमवायी कारण हो उसे गुण कहते है। गंगाधर राय ने गुण को कार्य के प्रति समवाय कारण माना है।

द्रव्य - गुणकर्माश्रय

गुण - गुण कर्मानाश्रय - योगेन्द्र नाथ सेन

- समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। च.सू. 1
- कर्मभिस्तु अनुमीयन्ते नाना द्रव्याश्रया गुणाः। सु.सू. 46
- विश्वलक्षणा गुणाः। र.वै.
- द्रव्याशय्यगुणवान् संयोग विभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुण लक्षणम्। वै.द.
- अथ द्रव्याश्रितः ज्ञेया निर्गुणा निष्क्रिया गुणाः। कारिकावली (विश्वनाथ पंचानन)
- आकृष्यन्ते जना यस्माद् द्रव्यं प्रतिबलादिव। प्रियव्रत शर्मा
- गुणः प्रधानमाकर्षकत्वात् रज्जुवत्। प्रियव्रत शर्मा
- गुणा गुणाश्रय नोक्तास्तस्मात् रस गुणान् भिषक। च.सू. 26

गुण के भेद

1. आधिभौतिक - 2
2. आध्यात्मिक-6

Shukla's Classes for Ayurveda

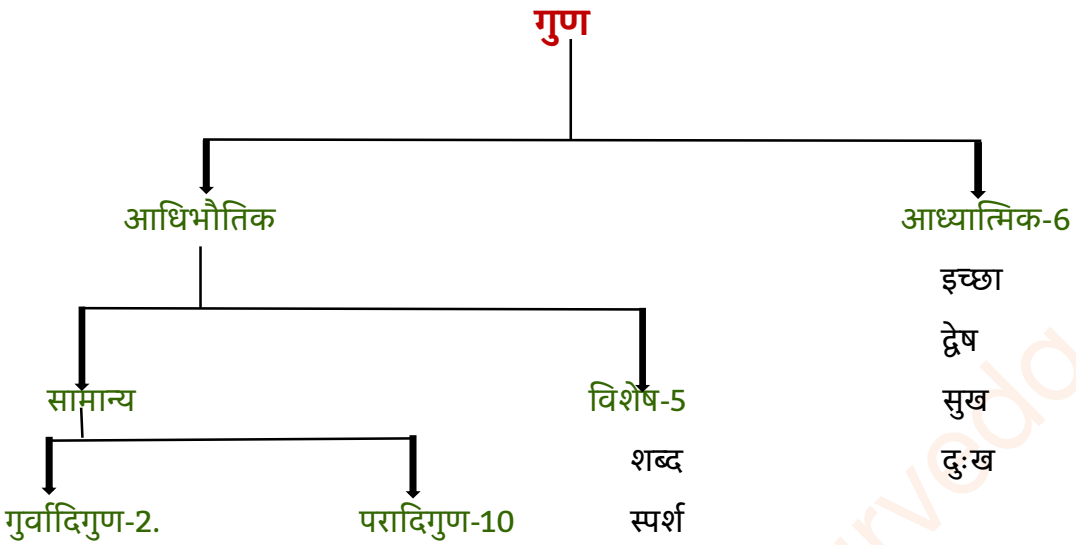

गुण

- आधिभौतिक
  - सामान्य
    - गुर्वादिगुण-2.
      - शारीरिक गुण (गंगाधर राय)
      - कायिक गुण
      - द्रवान्त गुण (चक्र.)
      - द्रव्य गुण
    - परादिगुण-10
      - चिकित्सासिद्धि उपाय
      - यौगिक गुण (प्रियव्रत शर्मा)
  - विशेष-5
    - शब्द
    - स्पर्श
    - रूप
    - रस
    - गंध
    - नैसर्गिक गुण
    - स्वाभाविक गुण
    - ऐन्द्रिक गुण
    - सार्था गुण
- आध्यात्मिक-6
  - इच्छा
  - द्वेष
  - सुख
  - दुःख
  - प्रयत्न
  - बुद्धि
  - सात्विकगुण, आत्मगुण

कणाद व हेमाद्रि ने परादि गुण की संख्या 7 मानी है युक्ति, संस्कार व अभ्यास को नहीं माना है।

न्याय ने परादि गुण की संख्या 8 मानी है युक्ति व अभ्यास नहीं माना है।

गुणों की संख्या

चरक ने गुणों की संख्या 41 मानी है।

सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः। गुणाःप्रोक्ताः च.सू. 1

आचार्य योगेन्द्र नाथ सेन ने गुणों की संख्या 42 मानी है। इसमें आध्यात्मिक गुण को 7 माना है 'मन का अर्थ' अतिरिक्त है।

- **न्याय दर्शन-** 24 (प्रशस्तपाद-24 और नव्य न्याय-21)
- **वैशेषिक दर्शन-** 17
- गुर्वादि गुण को गंगाधर राय ने 'शारीरिक गुण' कहा है।

Sriti's Classes for Ayurveda